

- पड़ने वाला आषाढ़ का महीना, असाढ़ 3. पलाश या ढाक का डंडा ।
- आषाढ़ी स्त्री.** (तत्.) 1. आषाढ़ नक्षत्र में उत्पन्न, आषाढ़ मास से संबंधित 2. आषाढ़ की एकादशी का पर्व, देवशयनी एकादशी।
- आसंग पुं.** (तत्.) 1. लगाव, आसक्ति, अनुरक्ति 2. संग, साथ 3. संलग्नता, लिप्तता 4. मुल्तानी मिट्टी जिससे लोग स्नान करते हैं।  
**क्रि.वि.** 1. सतत, निरंतर 2. अबाधित, अविच्छिन्न।
- आसंगत्य पुं.** (तत्.) असंगति का भाव, असंगतता, अननुरूपता, वैषम्य।
- आसंगी वि.** (तत्.) संपर्क रखने वाला, मेलजोल रखने वाला, आसक्त, संबद्ध।
- आसंजक पुं.** (तत्.) प्रशा. (ऐसा पदार्थ) जो चिपकाने का काम करे, चिपकाने वाला (गोंद आदि)।
- आसंजक टिकट स्त्री.** (तत्.+अं) प्रशा. टिकट जिसकी पीठ पर चिपकाने वाला पदार्थ लगा हो और जो पानी या नमी की सहायता से कागज पर सहज में ही चिपक जाए।
- आसंजन पुं.** (तत्.) बाँधना या जोड़ना 2. पहनना या धारण करना 3. अनुराग 4. भक्ति 5. उलझ जाना 6. किसी सतह से चिपक जाना 7. भौ. भिन्न किस्म के अणुओं का पारस्परिक आकर्षण-बल के कारण आपस में चिपक जाना। प्रयो. काँच की प्लेट पर पानी की बूंद का चिपकना आसंजन के कारण होता है।
- आसंजित पुं.** (तत्.) जिसका आसंजन हुआ हो, अभ्यागृहीत।
- आसंदिका स्त्री.** (तत्.) 1. मचिया, आसनी 2. छोटी कुरसी।
- आसंदी स्त्री.** (तत्.) 1. मचिया 2. मोढ़ा 3. खटोला 4. आरामकुरसी 5. वेदी।
- आसंबाध वि.** (तत्.) 1. अवरुद्ध 2. घेरे में पड़ा हुआ

- आसंसार वि.** (तत्.) 1. प्रगतिशील 2. विकारी संसार या अस्तित्व के रहने तक 3. परिवर्तनशील।
- आसंसृति वि.** (तत्.) दे. आसंसार।
- आस स्त्री.** (तद्.) 1. आशा, उम्मीद 2. सहारा 3. कामना मुहा. आस करना- आशा करना, आशा रखना; आस छोड़ना- आशा का त्याग करना; आस टूटना- निराश होना; आस देखना- इंतजार करना; आस तजना- आशा छोड़ना; आस पूरना- आशा पूरी करना; आस बाँधना- आशा उत्पन्न करना; आस लगाना- आशा बाँधना; आस होना- आशा या सहारा होना, गर्भ रहना; आस तकना- प्रतीक्षा करना  
**स्त्री.** (तत्.) 1. आसन 2. धनुष 3. कमान 4. उपवेशन 5. बैठना 6. सानिध्य, सामीप्य।
- आस-औलाद पुं.** (तत्.-अर) [आस+औलाद] बाल-बच्चे, संतान, संतति।
- आसकती वि.** (तद्.) उत्साह से काम न करने वाला, काम टालने वाला, आलसी।
- आसक्त वि.** (तत्.) 1. अनुरक्त 2. लीन, लिप्त 3. आशिक, मोहित, लुब्ध।
- आसक्ति स्त्री.** (तत्.) 1. मन का लगाव, अनुराग 2. लगन प्रयो. उसमें आकर्षण था, पर आसक्ति नहीं थी, ममता थी, पर मोह नहीं था -बाणभट्ट की आत्मकथा।
- आसत्ति स्त्री.** (तत्.) 1. भाषा. सामीप्य, निकटता, पूर्ण निकटता, सन्निधि, 2. पास-पास रहना 3. लाभ-प्राप्ति प्रयो. अर्थ-बोध के लिए शब्दों में आसत्ति होनी आवश्यक है जैसे- 'राम' बोलते समय 'रा' बोलकर दस मिनट बाद 'म' बोला जाए तो आसत्ति नहीं होगी।
- आसदन पुं.** (तत्.) 1. समीपता, निकटता 2. लाभ 3. संबंध, संपर्क।
- आसन पुं.** (तत्.) 1. वह वस्तु जिस पर बैठा जाए (चटाई, कुर्सी आदि) 2. बैठने की विधि 3. हठयोग में बैठने की विभिन्न आंगिक मुद्राएँ।